यूपी की शुगर इंडस्ट्री में कीमत की कड़वाहट, पेराई नहीं करेंगी मिलें

[श्रेया जय *नई दिल्ली*]

यूपी की चीनी मिलों ने मौजूदा शुगर सीजन में कामकाज बंद रखने का ऐलान कर दिया है। मिलों का कहना है कि रंगराजन फॉर्म्यूले के मुताबिक गन्ने का दाम तय होने पर ही वे कामकाज शुरू करेंगी।

यूपी के मुख्यमंत्री और गन्ना आयुक्त को लिखे पत्र में इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) ने कहा है कि जब तक सरकार चीनी मिलों की भुगतान की क्षमता को देखते हुए गन्ने का व्यावहारिक मूल्य रंगराजन फॉर्म्यूले के अनुसार नहीं करतीं, तब तक गन्ना पेराई का काम शुरू नहीं किया जा सकता है। हम घाटा उठाकर मिलें चलाने की हालत में नहीं हैं। चीफ मिनिस्टर 25 नवंबर को गन्ने का स्टेट एडवाइज्ड प्राइस (एसएपी) कैबिनेट के पास भेजने वाले हैं, लेकिन इससे पहले ही राज्य की करीब 35 हजार करोड़ रुपये की शुगर इंडस्ट्री के लिए हालात खराब हो गए हैं। मायावती सरकार ने एसएपी में काफी बढ़ोतरी की थी और उसे देखते हुए अखिलेश यादव सरकार पर भी किसानों की उम्मीदों का दबाव होगा। प्रदेश शासन के सूत्रों का कहना है कि इस सीजन में भी गन्ने के दाम इस बात पर निर्भर करेंगे कि किसानों को कितनी लागत लगानी पड़ी है। एक सीनियर ऑफिसर ने कहा कि खाद, ईंधन और खेती में काम आने वाली दूसरी चीजों के दाम बहुत बढ़े हैं। किसानों को इसकी भरपाई की जानी चाहिए। यूपी के केन डेवलपमेंट डिपार्टमेंट के सीनियर अधिकारी ने कहा कि इस सीजन में गन्ने की कीमत 300 रूपये प्रति क्विंटल से ऊपर जाने की उम्मीद है। रंगराजन फॉर्म्यूला अपनाने का मतलब यह होगा कि गन्ने के लिए 225 रूपये प्रति क्विंटल का बेस प्राइस रखा जाए। मौजूदा विवाद इंडस्ट्री और किसानों, दोनों के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। इस्मा के डायरेक्टर जनरल अविनाश वर्मा ने कहा कि गन्ने की मौजूदा कीमत बनी रही तो किसान या तो गुड़ बनाने वालों को आधे दाम पर गन्ना बेचने को मजबूर होंगे या अपनी फसल बर्बाद होने के लिए छोड़ देंगे। पिछले कुछ समय से बने हालात को देखते हुए किसानों ने भी अभी मिलों में गन्ना पहुंचाने की तैयारी शुरू नहीं की है। चीनी मिलों के आसपास के इलाकों में धरना-प्रदर्शन और गिरफ्तारियों का दौर शुरू हो गया है।

नवभारत टाइम्स

20/11/13